कारण कार्य सिद्धान्त

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सृष्टि संरचना कारण कार्य सिद्धान्त के अनुसार चल रही है। यह सनातन सत्य है कि बिना कारण के कार्य नहीं होता। कारण और कार्य एक–दूसरे में परिवर्तित भी हो जाते हैं। संसार में जड़ एवं चेतन सभी वस्तुओं पर यह नियम लागू होता है। वर्तमान शरीर की प्राप्ति का कारण यह है कि हमने पूर्व जन्म में ऐसे बीज बोये हैं जिसका परिणाम वर्तमान जीवन है। कारण कार्य की श्रृंखला जन्म–जन्मान्तर से चलती रहती है। भूतकाल की बात को हम जानते नहीं। पूर्वजन्म में मेरे द्वारा क्या–क्या किया गया? इसका ज्ञान हमें नहीं रहता, किन्तु वर्तमान जीवन के सुख–दुःख के आधार पर पूर्वजन्म में किये गये कर्मों का अनुमान हम लगा लेते हैं। इसीलिए किसी के वर्तमान जीवन के सुख को देखकर हम कहते हैं कि पूर्वजन्म में आपने अच्छा कार्य किया था और दुःख को देखकर सोचते हैं कि इसने पूर्वजन्म में बुरा काम किया था।

कारण और कार्य सहवर्ती होते है। जैसा आदमी बोता है वैसा ही वह काटता है। जिसने बबूल का वृक्ष बोया है वह बबूल का वृक्ष ही काटेगा। जिसने आम का वृक्ष लगाया है वह आम के फल को ही प्राप्त करेगा। जैसा कारण रहेगा वैसा ही कार्य होगा। महान् व्यक्ति वहीं बनता है जो पुरुषार्थी होता है या पूर्वजन्म में अच्छे कार्य किया है। उसको इस जन्म में पुरुषार्थ का ही परिणाम मिल रहा है। चौरासी लाख जीव योनियों के प्रति मन, वचन और काया से न तो किसी को कष्ट देना चाहिए और न ही किसी के बारे में बुरा सोचना चाहिए। बुरा सोचना और बुरा करना दूसरों को तो बाद में नुकसान करेंगे किन्तु सोचने वाले को तत्काल ही वह नुकसान करने लगते है। सोचने वाले का सिर दर्द होना, नकारात्मक विचार आना, मस्तिष्क का असंतुलित हो जाना इत्यादि क्रियाएं तत्काल ही चालू हो जाती है। इसलिए किसी के बारे में नकारात्मक विचार नहीं रखना चाहिए।

कोई भी व्यक्ति अच्छे संयोग के बिना महान् व्यक्ति नहीं बन सकता। आज के युग में देखा यह जाता है कि मानव के अन्दर थोड़ी सी सफलता प्राप्त करने पर अहंकार आ जाता है। अहंकार ही सभी दुःखों का कारण है। व्यक्ति तो निमित्त मात्र होता है। कार्य के सम्पन्न होने में अनेक कारण होते है– उपादान कारण, निमित्त कारण, आदि। घट के निर्माण में मिट्टी उपादान कारण है और कुंभकार निमित्त कारण है। चाक, जल, दण्ड आदि अनेक सहवर्ती कारण भी घट के निर्माण में सहयोगी होते है। किन्तु अहंकार के कारण यह प्रतीत होता है कि इस कार्य को मैंने किया। यही अहंकार कर्ता भाव है। ईश्वर ने सृष्टि को बहुत सुन्दर बनाया है। सृष्टि ईश्वर की इच्छा मात्र से ही निर्मित हो जाती है।

प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में कारण–कार्य के विषय में चिंतन किया गया है। सांख्य दर्शन कारण–कार्यवाद को सत्कार्यवाद के रूप में मान्यता देता है। न्यायदर्शन कारण कार्य को असत्कार्यवाद कहता है। जैन दर्शन सदसत्कार्यवाद के रूप में कार्य कारण सिद्धान्त को मानता है। अद्वैतवेदान्त कारण–कार्य को अनिर्वचनीय ख्यातिवाद के रूप में स्वीकार करता है। सांख्य दर्शन सत्कार्यवादी है। प्रश्न यह है कि कार्य की सत्ता उत्पति के पूर्व कारण में रहती है या नहीं। न्यायवैशेषिक और बोद्ध दर्शन कहते है कि नहीं। यदि उत्पति के पूर्व कार्य की सत्ता विद्यमान थी तब उत्पन्न होने का अर्थ ही क्या रह जाता है। निमित्त कारण का प्रयोजन ही क्या रह जाता है। यदि मिट्टी में घड़ा पहले से ही मौजूद था तो फिर कुम्हार को परिश्रम करने और चाक चलाने की क्या आवश्यकता पड़ी। इसके अलावा यदि कार्य पहले ही उपादान कारण में मौजूद था तो फिर हम कारण और कार्य का भेद किस आधार पर करते हैं। मिट्टी और घड़ा दोनों के लिए एक ही नाम का प्रयोग क्यों नहीं करते? मिट्टी का लोंदा ही घड़े का काम क्यों नहीं कर देता? यदि यह कहा जाये कि दोनो में आकार को लेकर भेद है तब तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि कार्य में कोई वस्तु ऐसी है जो कारण में नहीं थी, अर्थात् कार्य वास्तविक रूप में कारण में विद्यमान नहीं था। यह सिद्धान्त असत् कार्यवाद कहलाता है।

सांख्यदर्शन इस सिद्धान्त को नहीं मानता। सांख्य दर्शन का मानना है कि यदि कार्य कारण में अविद्यमान रहता तो किसी भी प्रयत्न से उसका आविर्भाव नहीं हो सकता। क्या बालू से तेल निकाला जा सकता है? इसका उत्तर है नही। बालू में तेल पहले से विद्यमान नहीं था, इसलिए

बालू से तेल नहीं निकलता। तिल को पेरने से तेल निकलता है, क्योंकि तिल में पहले से तेल मौजूद है। निमित्त कारण का काम इतना ही नहीं है कि वह उपादान कारण में अप्रत्यक्ष रूप से वर्तमान कार्य को प्रत्यक्ष कर दे। दूसरे शब्दों में कर्त्ता के व्यापार से जिस कार्य की उत्पत्ति होती है वह वस्तुतः अभिव्यक्ति मात्र है। अतः कार्य अपने उत्पत्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है। वृक्ष उत्पत्ति के पूर्व बीज में विद्यमान रहता है। कुछ सहकारी कारणों के सहयोग से उसका प्रादुर्भाव होता है। यदि वृक्ष पहले से ही बीज में विद्यमान न रहे तो सैंकड़ों प्रयत्न करने के बाद भी उसकी उत्पत्ति नहीं हो सकती। एक ही वस्तु की अव्यक्त और व्यक्त अवस्थाओं को हम क्रमशः कारण और कार्य नाम दे देते है। सृष्टि की प्रत्येक घटना कारण कार्य के अनुसार ही चलती है।